तृतीय अध्याय

:- उपन्यास का संक्षिप्त परिचय :-

अध्याय तृतीय

` उपन्यास का संक्षिप्त परिचय `

उषा प्रियंवदाजी का ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` (१९६०) यह पहला उपन्यास है। इस उपन्यास में प्रियंवदाजी ने प्रेम के बदलते हुए स्वरुप को उजागर किया है। आज का रोमान्टिक प्रेम अतीत का विषय बन चुका है। यह भारतीय नारी के आन्तरिक संत्रास,अन्तर्द्वन्द्व एवं घुटन की एक मार्मिक कहानी है, इसमें भारतीय नारी की सामाजिक,आर्थिक,पारिवारिक विवशताओं से जन्मी मानसिक स्थिति का भी वर्णन दिखाई देता है। इस सन्त्रास एवं कष्टमय जीवन का चित्रण एक शिक्षित अध्यापिका के माध्यम से प्रस्तुत किया है। भारतीय समाज की स्थिति एवं उसके परिवेश में एक नारी की स्थिति तथा उसके संघर्षमय जीवन की दयनीय स्थिति का चित्रण कर उषा प्रियंवदाजी ने नवीन मूल्यों की स्थापना की है। प्रेम के बाधक तत्व पहले बाहरी थे -- जैसे परिवार,समाज,नैतिकता आदि। इसके बाद प्रेम में बाधक तत्व प्रेमी की चेतना का अंश बन गया। इस उपन्यास में नायिका (सुषमा) प्रेम की इसी त्रासदी से पीड़ित है। उपन्यास का आकार संक्षिप्त है, किन्तु उषाजी ने भावों को बड़े ही कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। उपन्यास का परिवेश नवीन है घटनाएँ केवल एक या दो पात्रों के बीच घटित होती है। उपन्यास का कथानक आधुनिक शिक्षित समाज में नारी की यौन समस्याओं पर आधारित है। उषाजी ने यहाँ पर प्रणय सम्बन्धी असफलता को दिखाकर नारी सम्बन्धी समस्याओं का मनोवैज्ञानिक अध्यापन करना चाहा है। इस उपन्यास में प्रमुखता यह दिखाई देती है कि एक अध्यापिका के एकाकी जीवन एवं उसकी समस्याओं को दिखाया गया है वह अध्यापिका आधुनिक युग की है, किन्तु उसमें पारिवारिक जिम्मेदारी का

इतना बोझ है कि उसको निभाते - निभाने में वह अपना बलिदान कर देती है। परिवार की दयनीय स्थिति के कारण माता-पिता भी अपनी पुत्री के प्रति अपने उत्तरदायित्व से विमुख हो जाते हैं।

` पचपन खम्भे लाल दीवारें` उपन्यास की रचना १९६० ई.में.हुई है। यह हिन्दी का एक प्रयोगवादी उपन्यास है। शिल्प की दृष्टि से यह अभिनव प्रयोग है। वर्णनात्मक शैली में लिखा गया यह उपन्यास जीवन की बारीकियों को बड़े ही सफलतापूर्वक ढंग से प्रस्तुत करता है। इसमें शिक्षित नारी के माध्यम से समाज को चुनौती दी गई है कि सदियों से पूर्णतया परतन्त्र नारी आज भी मानसिक परतन्त्रता से ग्रसित है। वह स्वतन्त्र होने पर भी पारिवारिक दासता को नहीं छोड पाती। एक ओर जहाँ उसकी परतन्त्रता को चुनौती दी गई है वहाँ दूसरी ओर उसकी स्वतन्त्रता का समर्थन भी किया गया है। कालेज तथा छात्रावास के जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है। यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत उपन्यास में आधुनिक पर व्यंग किया है। आधुनिक सभ्यता भी उसी तरह खोखली है जिस तरह ` पचपन खम्भे लाल दीवारें` उपन्यास की नायिका का जीवनादर्श। उपन्यास की प्रमुख नायिका सुषमा है, एक प्रौढ अविवाहित युवति, सुषमा में जितना बाह्यादर्श है, उससे कई गुना अधिक आन्तरिक संत्रास एवं घुटन है। वह दूसरों को इससे अवगत कराना नहीं चाहती। सुषमा जितना अधिक छिपाने का प्रयत्न करती है उतना ही अधिक परेशान होती है। सुषमा की अन्य सहेलियाँ उसके इस व्यवहार का मजाक उडाती है। ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` में प्रभावोत्पादकता का नितान्त अभाव है ,कोई भी ऐसा स्थल दृष्टिगोचर नहीं होता जहाँ से उषाजी को कुछ मिल सके।

इस उपन्यास पर फ्रायड का प्रभाव स्पष्ट है। इसमें प्राय: प्रत्येक पात्र दमित वासनाओं का शिकार है। इसमें उषाजी ने एक ऐसे वर्ग को प्रस्तुत किया है जिसमें निश्चयात्मकता का नितान्त अभाव पाया जाता है। वह युवावर्ग है,जो अपने-अपने भावी जीवन को आधार देने के लिए व्याकुल होता है ,किन्तु मन की अस्थिरता उसे निराधार बना दिया करती है।

प्रस्तुत` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास का कथानक सिर्फ १४४ पृष्ठों में

समाप्त हो जाता है। इसमें कथानक शिल्प उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना शिल्प के अन्य तत्व। उपन्यास का कथानक सीधा एवं सपाट है,कहीं भी कथानक में मोड अथवा उलझान नहीं आई है। प्राय: एक ही कहानी आद्यान्त चलती है। सम्पूर्ण कहानी एक या डेढ वर्ष के भीतर घटित होती है। घटनाओं का नितान्त अभाव है। इसमें सुषामा के अविवाहित जीवन की कहानी अनेक समस्याओं को समेटते हुए प्रस्तुत की गई है। उसकी भावनाओं और पारिवारिक परिवेश में निरंतर संघर्ष हो रहा है। इस संघर्ष में सुषामा बुरी तरह पिस रही है,हाँफ रही है,टूट रही है।

सत्ताईस वर्ष की सुषामा एक निम्न मध्यम वर्गीय परिवार की शिक्षित युवति है। दिल्ली के एक महिला विद्यालय में अध्यापिका है। कानपुर में उसका घर है। घर पर पक्षाघात के कारण पीडित कुछ भी कार्य करने में असमर्थता है। वृध्दपति की द्वितिय पत्नी,अतृप्त इच्छाओं वाली माँ है और छोटे छोटे भाई-बहन हैं। इतने बडे परिवार का कुल बोझ अपने कन्धो पर उठाये सुषामा अपने अध्यापन कार्य में दत्तचित्त होकर लगी है। सुषामा के सौन्दर्य,सौजन्य और कौशल्य ने उसे छात्राओं मे अत्यन्त लोकप्रिय बना दिया है। प्रिन्सिपल की भी पूर्ण विश्वस्त कार्यकर्ता है। प्रिन्सिपल ने स्वंय उसका नाम रिकामेन्ड करके उसे छात्रावास की वार्डन लगवा दिया है। जिसके कारण सुषामा से रहने को बडा बंगला और अतिरिक्त अलाऊन्स भी मिलने लगा है वह अपने परिवार की इच्छाओं की पूर्ति में लगी हुई है। सुषामा के माता-पिता ने उसके लिये कोई वर खोजने का प्रयत्न ही नहीं किया था। एक विदेशी फर्म में ऊँची तनख्वाह पानेवाला माकुक युवक है, नील। अचानक सुषामा की भेंट नील से होती है और सुषामा के अन्तर का नारित्व उसके प्रति आकृष्ट होता है। पर तभी उसकी सहकारिणीयों में और छात्राओं में उसकी चर्चा चल पडती है। उसकी माँ उसके पास आयी थी और उसे नील से अपनी छोटी बहन नीरु का विवाह कराने का प्रयत्न करने को कह गई थी । इसी ही बीच प्रिन्सिपल ने उसे बुलाकर अपना व्यवहार सुधारने को कहा था,इन सब परिस्थितियों ने सुषामा को बुरी तरह झकझोर

कर रख दिया। माँ ने नीरु का विवाह कहीं और तय कर दिया है। उसके लिए सुषमा छः हजार रुपये की सहायता करती है। किन्तु उसके अन्दर मानसिक कष्ट है। वह अपने माता-पिता द्वारा किए गए अनुचित कार्यों को सहन करती है, अपनी माता से कहती है --" जरा अपने दिल के अन्दर झाँककर देखो कि तुम तुमने मेरे लिए क्या किया है। मेरा आराम से रहना ही तुम्हें खटकता है। तुम शादी तय करते नीरु की, मैं अपने सारे कपड़े-गहने उठाकर दे डालूँगी। यही तो तुम चाहती हो।[१] और एक जगह सुषमा अपनी माँ पर अपने दुःख का व्यंग्य करती हुई कहती है -- " मैं कुंवारी रह गई तो कौन-सा आसमान फट पड़ा। इन दोनों की अगर शादी न हो सकी तो क्या हो जाएगा।"[२]

सुषमा को केवल उसी की समस्याएँ नहीं हैं। उसके चारों ओर दीवारें हैं -- दायित्व की, कुण्ठा की, अपने पद की, गरिमा की और परिवार की। नीरु का विवाह, प्रतिमा तथा अन्य भाइयों की पढ़ाई, माता-पिता की सेवा आदि कार्य उसी पर निर्भर है। उसे पूरे परिवार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन्हीं कारणों से वह अपना सुख त्याग देती है। वह अपने प्रेमी नील से स्पष्ट रुप से कहती है --" पहली बात तो नील यह है कि मेरी बहुत जिम्मेदारियाँ है। तुमसे तो कुछ भी छिपा नहीं है। पक्षाघात से पीड़ित बाबू, दो बहनें और भाई, सब मुझे ही करना है .... ।"[३] जहाँ एक ओर सुषमा की पारिवारिक समस्याओंका उद्घाटन हुआ है वहाँ दूसरी ओर सुषमा एवं नील की अधूरी प्रणय कथा भी उपन्यास में कही गई है। यह उपन्यास पूर्णतया दुःखान्त बनाया गया है। इसमें मानव के मानसिक भावनाओं एव उद्गारों का हनन किया गया है। उपन्यास की

---

१ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, तृतीय - संस्करण १९७६, पृ.८६।

२ - वही - पृ.८७।

३ - वही - पृ.११३।

12551

A

नायिका सुछामा दु:ख की प्रतिमा है, उसके चारों तरफ दु:ख का सागर हिलोरें मारता है फिर भी इन सबके बावजूद भी वह अपने जीवन से संतुष्ट है। जब सुछामा अपने कॉलेज के कम्पाउंड में रहनेवाली अपने से आयु में छोटी पढानेवालियों को अपने मित्रों के साथ आते-जाते देखती है तब सुछामा के जीवन में दु:ख की दरारें पड जाती है। सुछामा के इस सूनेपन का साथी बनकर नील उसके जीवन में स्थान पाने लगता है। वह किसी भी पुरुछा का आश्रय पाना चाहती है। यह कामना सुछामा को अपने से कम आयुवाले नील से जोड देती है उसकी सन्ध्याएँ फिर रंगीन होने लगती है, मन और शरीर में एक अपने जीवन में आये हुए नील की नयी चेतना का संचार होने लगता है। लेकिन समाज की मर्यादा का ध्यान रखकर सुछामा नील को त्याग देती है। नील से दूर होने का विचार आते ही उसे सालने लगता है। यह भय उसे सताने लगता है कि नील का प्रेम, नील की सबल बाँहों का सहारा उसे अधिक दिनों तक नहीं मिल सकेगा। जब सुछामा ने नील को अपना शरीर दिया था तो अनजाने ही अपनी भावनाएँ विचार और मन भी समर्पित किये थे। जब नील सुछामा के समीप होता तो विरह की छाया उसे मँडरानी नजर आती है। काश, वह भी युवति होती। उसके प्रेम में उसका अपना ही व्यक्तित्व बाधा बनकर आता है। वह नील से आयु में बडी है और नील उसे किसी दिन भी छोड सकता है। एक आलोचक का मत है कि ' सुछामा रुढिवादी नारी है। सुछामा त्यागमयी नारी के रुप में चित्रित है। उसे जैनेन्द्र की नायिकाओं की भाँति आत्मपीडन पसन्द है।' [४]

इन सब पारिवारिक उत्तरदायित्वों के मध्य में सुछामा बेचैन और परेशान हो जाती है, दम घुटता है। अत: वह नील का विवाह प्रस्ताव ठुकरा देती और फिर कभी भी नील से न मिलने का निश्चय कर लेती है। सुछामा के पलायन में आधुनिक मानव की अपने से दुराव और अपने आप में परिचय के साथ बढता हुआ अपरिचय ही अधिक है। इस भावना के अधीन होकर वह नील को अपने दरवाजे से लौटा देती है -- --' जाओ नील, जाओ ' सुछामा ने अन्दर जाकर दरवाजे बन्द कर लिये। किवाड

---

४ स्वातंत्र्योत्तर कथा - साहित्य - सीताराम शर्मा - पृ.१९१।

पूरी तरह बन्द होने से पहले उसने नील के चेहरे पर जो भाव देखें, वह उसके मर्म तक पैनी चीज की तरह घुसते चले गये।"[५] अपने सुख के क्षणों में वह प्रेम से विमुख होकर नील को अपने जीवन से दूर कर देती है। इस तरह सुषमा पचपन खम्भों से घिरी अपनी चहारदीवारी में लौट आती है। फिर एक दिन अचानक सुषमा को किसी से सूचना मिलती है कि एक दिन के बाद ही नील हालैण्ड जा रहा है। पर नील उससे मिलने नहीं आया/उसी दिन सुषमा के कालेज में हिस्ट्री एसोसियेशन का सलाना उत्सव शुरु था और सुषमा उसमें बुरी तरह व्यस्त है व्यस्तता के बीच ही वह अपनी सखी से टैक्सी बुलाने को कह देती है,मुझे एयरपोर्ट जाना है और स्वंय तैयार होने लगती है। उसका दिल संघर्षरत है। यह व्यक्ति का वास्तविक संघर्ष है। टैक्सी जब तक आयी उसका इरादा बदल गया है और वह अपनी सखी को टैक्सी वापस लौटने को कहकर पर्स हाथ से फेंक देती है, उसकी हथेलियों पर पसीना बह आता है और उन्हीं हाथों से वह अपने होठों को रगड-रगड कर पोंछने लगती है।

अत: भारतीय नारी जब शिक्षित होकर स्वंय को नवअधिकार चेतना से युक्त अनुभव करती है,तो उसके साथ ही उसके दुर्बल कन्धों ने आगे बढकर पुरुषोचित बोझ को उठा लिया है। समाज में पुरुष के सामने वह उपार्जन करती है। पर उसका व्यक्ति जीवन नये संघर्षों का सामना करता है।

उपन्यास का कथ्य नारी के जीवन की दुविधा को जो आधुनिक व्यक्ति की दुविधा है, चित्रित ही नहीं करता अपितु पाठक को झकझोर कर रख देता है। सुषमा उस व्यक्ति-नारी का रुप है जो परिवार के उत्तरदायित्वों के बोझ को धारण करके स्व का हनन करती है। उत्तरदायित्वों का बोझ उसका नारी होने का सहज अधिकार छीन लेता है। यह बोझ उसे एक ऐसी बन्दिनी बना देता है। जिसकी नियति उन पर पचपन खम्भों और लाल दीवारों में छूट-छूट कर मरने की विवश करता है। ३३ वे वर्ष की आयु में भी क्या उसके मन में एक प्रेयसी नहीं विद्यमान हो सकती है ? वह सब खम्भे गिराकर दीवारों को तोडकर उसके पीछे भाग

---

५ उषा प्रियंवदा - पचपन ,,,,, दीवारें - राजकमल प्रकाशन,तृतीय संस्करण, १९७६,दिल्ली,पृ.१२६।

जाना चाहती है। उसके अन्दर की नारी अपने प्रेमी के पास भागकर पहुँचना चाहती है। वह उसकी तैयारी करती है। परन्तु सुछामा के दिल का संघर्ष अत्यन्त भयानक है अन्त में टैक्सी आ जाने के बाद पारिवारिक दायित्व उसके ` नारी ` का गला बड़े जोर से दबा देता है। उसके अन्दर की ` नारी` छटपटाकर दम तोड देती है। वह अपने चेहरे पर लगाये गये प्रसाधनों को रगड कर मिथने लगती है और टैक्सी को लौटा देती है।

` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में पात्रों की संख्या अधिक नहीं है। इसमें स्त्री पात्रों की प्रधानता है। प्रत्यक्ष रुप से केवल एक ही पुरुछा पात्र दिखाई देता है। अन्य नाम मात्र के है। पुरुछा पात्र स्त्री पात्रों के पूरक है, उनकी स्वतंत्र महता नहीं है। पात्रों में सुछामा, मीनाक्षी, नीरु, सुछामा के माता-पिता, मिस शास्त्री, मिसेज पुरी, कृछणा, कौशल्या, नील, मैरी आदि आते है। नायिका के रूप में सुछामा का चित्रण किया गया है। उछाजी ने नील का चित्रण केवल सुछामा के मनोवैज्ञानिक भावों को उभारने के लिए किया है। इसमें चरित्र-चित्रण का विकास अपेक्षाकृत बहुत कम हुआ है। पात्रों का प्रभाव पाठकों को छूता भी नहीं, हाँ इतना अवश्य है कि पाठक परिस्थितियों से अवश्यमेव अवगत हो जाते है। मुख्य पात्रों के रुप में सुछामा एवं नील आते है। घटनाएँ केवल सुछामा की ही चक्कर लगाती है, इन्हीं से उसके चरित्र का उद्घाटन होता है। सुछामा के सामने समस्याएँ दो रुपों में आती है, प्रथम पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक रुपों में, द्वितीय व्यक्तिगत रुप में। उछाजी परिस्थितियों एवं समस्याओं के उद्घाटन में लगी है जिससे चरित्र गौण हो गए है। मिस शास्त्री, मिसेज पुरी आदि स्थल पात्रों के रूप में विकसित हुए है। मीनाक्षी को अध्यापन कार्य से उपेक्षित दिखाकर अध्यापकों की स्थिति का भी परिचय दिया गया है। सुछामा एवं नील के असफल प्रेम का कारण सुछामा का उलझनपूर्ण जीवन है। सुछामा में जिस मानवीय गुणों का विकास किया गया है, उनका परिचय उसकी स्वाति के प्रति सहानुभूति से मिलता है। मिसेस पुरी द्वारा स्वाति पर कसे गए व्यंग पर सुछामा कहती है -- ` आपके सामाजिक मापदण्ड यह कहते है कि आप सबके सामने किसी के व्यक्तिगत जीवन धज्जियाँ उडा दीजिए ? हरेक का जीवन एक ऐसा अनुलंघनीय दुर्ग है - जिसका

अतिक्रमण करना किसी का अधिकार नहीं है .... । यदि आपको पता था कि स्वाति किसी परेशानी में है तो आपको सहायता करनी चाहिए थी । वह लड़की दूर देश में आकर अस्पताल में पड़ी है और आप.... । [६]

इसीलिए स्त्री-पुरुष संबंधों में वह परम्परागत रुढियों एवं नैतिकता का विरोध करती हुई कहती है --

" मैं किसी की परवाह नहीं करती .... मै अपना काम ठीक करती हूँ । मुझसे किसी की शिकायत नहीं है, फिर मेरे व्यक्तिगत जीवन में किसी को दखल देने का क्या हक है ? "[७]

सुषमा को अपने परिवार की जिम्मेदारी का पूरा ख्याल है, वह परिवार को कभी भी निराधार छोड़ना नहीं चाहती । वह नील को चले जाने के लिए कहती है । वह विवाह को भी ठोकर मार देती है । वह कहती है --

- नौ साल से मै इस कॉलेज में हूँ नील, पर यहाँ लोग किसी को जीने नहीं देते । इसीलिए मै तुमसे यह कह रही थी कि मेरी जिन्दगी खत्म हो चुकी है । मै केवल साधन हूँ । मेरी भावना का कोई स्थान नहीं । विवाह करके परिवार को निराधार छोड देना मेरे लिए सम्भव नहीं । मैंने अपने को ऐसी जिन्दगी के लिए ढाल लिया है । तुम चले जाओगे तो मैं अपने को उन्हीं प्राचीरों में बन्दी कर लूँगी । "[८]

सुषमा में जहाँ एक ओर मानवता का उद्‌घोष किया गया है वहाँ दूसरी ओर स्त्रियोचित ईर्ष्या का भी भाव मिलता है । वह नीरु के विवाह के सन्दर्भ में अपनी माँ से कहती है --" जरा अपने दिल के अन्दर झाँकर देखो कि तुमने मेरे लिए क्या किया है । मेरा आराम से रहना ही तुम्हें खटकता है तुम शादी तय करो नीरु की, मै अपने सारे गहने-कपडे उठाकर दे डालूँगी । यही तो तुम चाहती हो । "[९]

---

६ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७६, पृ. २९ ।

७ - वही - ,, पृ. ५४ ।

८ - वही - ,, पृ. ६१ ।

९ - वही - ,, पृ. ८६ ।

इस चरित्र के लिए उषा प्रियंवदाजी जितनी परेशान है उतनी सफलता उसे नहीं मिल सकी है।

एक अध्यापिका को उसके व्यक्तिगत जीवन दर्शन के लिए विद्यालय, छात्रावास, निवासस्थान (जन्मस्थान) तथा रेस्तरां आदि स्थानों का आधार दिया गया है। विद्यालय में अध्यापिकाओं के साथ रेस्तरां में प्रेमी के साथ, छात्रावास में लडकियों, नौकरों आदि के साथ, घर में माता-पिता तथा सहयोगियों के साथ सुषमा के चरित्र एवं जीवनादर्श का सफल चित्रण किया गया है। उसके लिए उषाजी ने समुचित वातावरण का निर्माण किया है। घर के उत्तरदायित्व के लिए माता-पिता की अस्वस्थता, नीरु की शादी, प्रतिमा की पढाई आदि का प्रसंग स्थापित करके उषाजी ने एक प्रसंगानुकूल वातावरण का निर्माण किया है। प्रणयवृत्ति के निर्वाह के लिए नील जैसे पात्र एवं रेस्तरां तथा छात्रावास के एकाकी जीवन का निर्माण कर वातावरण की सृष्टि की गई है।

देशकाल की दृष्टि से उपन्यास का कथानक संगत है। उपन्यास का निर्माण १९६० ई.में हुआ है। यह आधुनिक युग कहा जाता है, हाँ, स्त्री स्वातंत्र्य उसकी अपनी विशेषता है। पात्र एवं कथानक आधुनिक है तथा देशकाल के उपयुक्त है। शिक्षित नारी, उसकी पारिवारिक समस्याएँ तथा उसकी विवाह सम्बन्धी स्वतंत्रता देशकाल के उपयुक्त है। प्रकृति चित्रण का प्राय: अभाव है।

कथोपकथन एवं भाषा शैली शिल्प उपन्यास का अभिन्न अंग है। उपन्यास में पात्रों का होना आवश्यक है तथा उनमें परस्पर सम्भाषण भी उतना ही आवश्यक है। अत: कथोपकथन का होना स्वाभाविक है। कथोपकथन का आधार भाषा ही है। इस उपन्यास में संवाद बडे ही संक्षिप्त, सरल एवं स्वाभाविक हुए है। स्वगत कथन का अभाव है तथा लम्बे-लम्बे सम्भाषण से भी उपन्यास अछूता है। इसलिए सुषमा और नील का यह परस्पर संवाद उल्लेखनीय है ---

" मै भी चलूँगा।"

" वह चौकी, " आप कहाँ से आ गए ? "

" पीछे, पीछे तो आ रहा था। एक बार भी मुडकर आपने नहीं देखा।"

` मै कहे देता हूँ, चाहे नाराज हो । मै भी चलूँगा ।`
` वहाँ तक चलेंगे, फिर लौट कर आएँगे ?
सुष्मा ने पूछा ।`
` हाँ इतनी रात को मै सात-आठ मील अकेली नहीं जाने दूँगा ।`
` हमेशा ही तो जाती हूँ, सुष्मा मन्दस्वर में बोली ।
नील के हठ के समक्ष वह अवश होने लगी । वह नील को ताकने लगी ।`
` पर मै आज नहीं जाने दूँगा ।` [१०]

इसमें प्राय: प्रत्येक पात्र का चरित्र विशेष परिस्थितियों द्वारा परिवर्तित हुआ है ।` पचपन खम्भे लाल दीवारें` मनोवैज्ञानिक उपन्यास होने के कारण मानसिक वृत्तियों का स्पष्टीकरण देता है । उपन्यास में चरित्र प्रतिकात्मक बन गए है ।

` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास की माषा शुध्द एवं परिमार्जित है । कथोपकथन स्वामाविक है । प्राय: इसमें सभी पात्र शिक्षित है,जिसमें उपन्यास की माषा में देशी शद्व कम आ पाए है । उपन्यास की माषा विधालयीन माषा है । अंग्रेजी,संस्कृत तथा देशी शद्वों का प्रयोग मिलता है । इसमें` ताकना`[११] जैसे देशी शद्व का जहाँ प्रयोग है ।` बूँद-बूँद से घट मरता है ।`[१२] जैसी कहावत का भी प्रयोग किया गया है । प्रस्तुत उपन्यास की शैली वर्णनात्मक है । वर्णनात्मक शिल्प मावों को व्यक्त करने का सबसे सरल माध्यम होता है । कुशल उषा प्रियंवदाजी ने इस सरलतम माध्यम से गूढ़ तथ्यों का उद्‌घाटन किया है ।

निष्कर्ष---

` प्रस्तुत` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में` उषा प्रियंवदाजी` ने

---

१० उषा प्रियंवदा` - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन,दिल्ली, तृतीय संस्करण १९७६, पृ.४४ ।

११ - वही - ,, पृ.४४ ।

१२ - वही - ,, पृ.१४।

प्राय: प्रत्येक पात्र की इच्छाओं का दमन किया है। फलत: उपन्यास का दु:खान्त हो जाना स्वाभाविक है। उपन्यास में कुछ पाश्चात्य शिल्प के लक्षण दिखाई पड़ते हैं। कथानक पात्र आदि को संक्षिप्त कर, विस्तृत भावों को संक्षिप्त कर उषा प्रियंवदाजी ने जिस रुप में उपन्यास का निर्माण किया है, वास्तव में उसमें शिल्प की नवीनता का परिचय मिलता है। उपन्यास में सुषमा के मन का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करना ही मुख्य प्रतिपाद्य प्रतीत होता है। सुषमा की सामाजिक, मानसिक स्थिति, छात्रावास के 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उन परिस्थितियों का प्रतीक है, जिनमें रहकर सुषमा को श्वास तथा घुटन का तीखा एहसास होता है, फिर भी वह इससे मुक्त नहीं हो पाती क्योंकि सुषमा की संस्कार बध्दता के कारण उन परिस्थितियों के बीच जीना ही उसकी अन्तिम नियति है --' परिस्थिति प्रताड़ित विवाह - सुख से वंचित कुमारी के अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण इस कृति का एक पात्र लक्ष्य है, जिसमें उषाजी को पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है। नारी होने के नाते उषाजी ने नायिका के मनोभावों को गहराई से परखा है और अत्यन्त कुशलतासे उन्हें कथासुत्र में गुँथकर प्रस्तुत किया है।' १३

' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास में सुषमा की आत्मपीडा को बहुत ही मार्मिक ढंग से दिखाया है। सुषमा का नील से परिचय एक बहुत सामान्य सूत्र के आधार पर होता है। परिचय के उपरान्त नील बहुधा सुषमा के पास कालेज में आने लगता है। जब यह घनिष्ठता काफी बढ जाती है तब वहाँ प्राय: उसकी चर्चा भी होने लगती है। वह अविवाहित है। और नील को पति के रुप में प्राप्त भी करना चाहती है। सुषमा अपने भार को उठाती है इसी में अपनी परिस्थितियों को भूले रहती है। अपनी आवश्यकताओं को भी उपेक्षा करती है और उदासीनतापूर्वक एक सूनेपन में जीना सीख जाती है। जब तक उसके जीवन में नील नहीं आता तब तक सुषमा एक तटस्थ भाव से जीवित रहती है। और नील के आने पर उसके मन में वे

---

१३ उर्मिला गुप्ता - स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएँ - राधाकृष्ण प्रकाशन, १९६७, प्र.स.भोपाल, पृ.३२९।

कामनाएँ जागती है जो अभी तक दबी हुई थीं । परन्तु कभी-कभी वह गम्भीरतापूर्वक नील से आगे भेंट करने का निषेध कर देती है क्योंकि कभी-कभी वह यह अनुभव करती है कि यद्यपि उसको सहारे की आवश्यकता है परन्तु अब उसका जीवन समाप्त हो चुका है । वह केवल एक साधन है परन्तु उसमें फिर जीवन के प्रति एक लालसा जागृत होती है और फिर वह कामना और विरक्ति के बीच झूलने लगती है । नील भी कुछ नहीं कर पाता यहाँ तक कि वह विदेश चला जाता है और सुषमा अपने सूनेपन की घूटन में आगे भी अनिश्चियता में जीने के लिए छूट जाती है । इस प्रकार से कुछ परिपक्व अनुभूतियों के कोमल स्पदनों के भावात्मक रुप से चित्रण की दृष्टि से यह ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास महत्वपूर्ण है ।